नमो-नमो दुर्गे सुख करनी। नमो-नमो दुर्गे दुःख हरणी।।

सोमवार, 17 अगस्त, 2026 ।

वर्ष 19 । अंक 122 । पृष्ठ 4 ।

आरएनआई नंबर : RAJHIN/2007/20298

व्हाट्स एप नंबर : 85291-15101

Email : berisgnr@gmail.com

website: www.sandhyadep.world

सांध्यदीप

We Fight For Human Rights

श्रीगंगानगर में वार्ड आरक्षण की लॉटरी पूरी, चुनावी समीकरण बनने लगे

श्रीगंगानगर। नगर परिषद चुनाव के लिए वार्डों का आरक्षण वर्ग निर्धारित करने की प्रक्रिया के तहत वार्डवार लॉटरी निकाली गई। नगर परिषद के कुल 65 वार्डों में से 40 वार्ड अनारक्षित रखे गए हैं। इनमें 13 वार्ड महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। वहीं ओबीसी वर्ग के लिए भी 13 वार्ड आरक्षित किए गए हैं। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए भी लॉटरी के माध्यम से आरक्षण तय किया गया।

अनारक्षित वार्डों में 5, 6, 8, 13, 14, 21, 22, 23, 25, 26, 29, 36, 40, 41, 43, 44, 46, 48, 54, 55 और 65 नंबर वार्ड शामिल हैं। महिला वर्ग के लिए वार्ड संख्या 2, 7, 16, 18, 19, 20, 27, 34, 37, 38, 39, 47 और 57 आरक्षित किए गए हैं।

ओबीसी महिला वर्ग के लिए वार्ड संख्या 4, 32, 42 और 64 आरक्षित हुए हैं। वहीं ओबीसी पुरुष वर्ग के लिए वार्ड संख्या 1, 3, 9, 10, 15, 24, 28, 30 और 35 आरक्षित हैं।

अनुसूचित जाति वर्ग के लिए वार्ड संख्या 12, 17, 33, 49, 50, 51 और 60 आरक्षित किए गए हैं। एससी महिला वर्ग के लिए 11, 56, 59 और 62 नंबर वार्ड आरक्षित हैं। अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए वार्ड संख्या 63 आरक्षित किया गया है।

सांध्यदीप ने सभी वार्डों के आरक्षण की लॉटरी प्रक्रिया को विस्तार से कवर किया है। वार्डों के संबंध में प्रकाशित की जा रही जानकारी में पूरी सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी संभावित त्रुटि की स्थिति में प्रशासन द्वारा जारी आधिकारिक सूचना को ही अधिकृत माना जाए।

सभापति पद का आरक्षण पहले ही तय हो चुका है और यह पद सामान्य वर्ग के लिए आया है। अब वार्ड आरक्षण की लॉटरी पूरी होने के साथ ही नगर परिषद चुनाव को लेकर राजनीतिक गतिविधियां तेज होने लगी हैं। संभावित उम्मीदवार अपने-अपने वार्डों के आरक्षण के अनुसार चुनावी गणित बैठाने और आगे की रणनीति तैयार करने में जुट गए हैं। कई दावेदारों के समीकरण बदल गए हैं, जबकि नए चेहरों के लिए भी चुनावी मैदान खुल गया है।

अब सभी की निगाह राज्य इलेक्क्शन कमीश्न की ओर है। स्टेट कमीश्नर ने राज्य सरकार से कानून व्यवस्था आदि से संबंधित रिपोर्ट तलब की हुई है। रिपोर्ट प्राप्त होने पर राज्य निर्वाचन आयोग चुनाव कार्यक्रम जारी करेगा और उसके साथ ही प्रदेश के शहरी क्षेत्र में आचार संहिता लागू हो जायेगी। वन स्टेट वन इलेक्शन को सरकार पूरा नहीं कर पायी है और पंचायती राज चुनावों के लिए आरक्षण लॉटरी स्थगित हो गयी है।

सुपर किंग बनने के लिए कई चेहरे

अनेक ऐसे चेहरे हैं जो स्वयं अध्यक्ष पद के लिए दावेदार नहीं है किंतु वे पर्दे के पीछे रहकर चुनावी मैदान को अपने हिसाब से चलाना चाहते हैं अर्थात उम्मीदवार कोई भी हो, बस अपना होना चाहिये और उसके लिए धन के भंडार खोले जा रहे हैं। श्रीगंगानगर में अनेक लोग हैं और इसी तरह से विभिन्न उपखण्ड मुख्यालयों पर भी इस तरह के चेहरे हैं। राजनीतिक आका बनने की हसरत किसे नहीं होती और इस हसरत को अनेक नेता पूरी करना चाहते हैं। नगर परिषद चुनावों में कांग्रेस हो या भाजपा, अनेक बगावती सुर सुनने को मिल सकते हैं औरयह लोग तीसरे पक्ष के पास जायेंगे जो गोटियां फेंकने के लिए बैठे हुए हैं। इस तरह से सुपर किंग बनने वाले चेहरों की संख्या सीमित नहीं है और कई तो अपने परिवार के सदस्य को मैदान में उतारकर पूरा कंट्रोल अपने पास रखने की कोशिश कर रहे हैं।

श्रीगंगानगर जिले की 11 नगरीय निकायों में पार्षद पदों का आरक्षण तय

श्रीगंगानगर। जिले की 11 नगरीय निकायों में पार्षद पदों के आरक्षण की लॉटरी प्रक्रिया सोमवार सुबह शुरू हुई। लॉटरी के दौरान बड़ी संख्या में संभावित जनप्रतिनिधि और चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे दावेदार मौजूद रहे। सभी की नजर अपने-अपने वार्ड के आरक्षण पर टिकी हुई थी। आरक्षण की स्थिति स्पष्ट होते ही कई दावेदारों के राजनीतिक समीकरण बदल गए, जबकि कुछ के चेहरे पर राहत और उत्साह नजर आया।

वार्डों के आरक्षण के साथ ही नगरीय निकाय चुनाव को लेकर राजनीतिक गतिविधियां भी तेज हो गई हैं। जिन दावेदारों के वार्ड उनकी अपेक्षा के अनुरूप आरक्षित हुए, वे इसे चुनावी मैदान में पहली सफलता के रूप में देख रहे हैं। वहीं आरक्षण बदलने से कई संभावित उम्मीदवारों को अब नए वार्ड और नए राजनीतिक समीकरण तलाशने पड़ सकते हैं।

सामान्य वर्ग के लिए आरक्षित वार्डों को लेकर भी दावेदारों में खासा उत्साह दिखाई दिया। हालांकि सामान्य वर्ग के वार्ड से कोई भी पात्र व्यक्ति चुनाव लड़ सकता है, लेकिन कई संभावित जनप्रतिनिधियों का कहना था कि वे सामान्य वार्ड सामने आने पर किसी जिम्मेदार और उपयुक्त व्यक्ति को समर्थन देना पसंद करेंगे। उनका तर्क था कि सामान्य वार्ड से सामान्य वर्ग के उम्मीदवार को ही अवसर मिलना चाहिए।

जिले की नगरीय निकायों में आरक्षण की प्रक्रिया पूरी होने के बाद अब चुनावी दावेदार अपने-अपने वार्डों में सक्रिय होने लगे हैं। राजनीतिक दलों के स्तर पर भी संभावित उम्मीदवारों को लेकर मंथन शुरू होने की संभावना है। आरक्षण के बाद बदले समीकरणों के बीच आने वाले दिनों में दावेदारों की सक्रियता और बढ़ सकती है।

नगर परिषद सभापति पद के साथ ही जिले की 10 नगरपालिकाओं के अध्यक्ष पद का आरक्षण पहले ही तय हो चुका है। इनमें सादुलशहर, केसरीसिंहपुर, श्रीकरणपुर, गजसिंहपुर, पदमपुर, रायसिंहनगर, श्रीबिजयनगर, अनूपगढ़ तथा घड़साना नगरपालिकाएं शामिल हैं। इस तरह अध्यक्ष पदों का आरक्षण पहले ही स्पष्ट होने के बाद अब पार्षद पदों के वार्डवार आरक्षण से नगरीय निकाय चुनाव की तस्वीर और अधिक साफ हो गई है। अब संभावित उम्मीदवार चुनाव आयोग की ओर देख रहे हैं।

ट्रंप ने अमेरिका-दक्षिण कोरिया सैन्य अभ्यासों में बड़ी कटौती का किया एलान

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दक्षिण कोरिया के साथ होने वाले संयुक्त सैन्य अभ्यासों में बड़ी कटौती करने की घोषणा की है। उन्होंने इसके लिए उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन के साथ अपने बहुत अच्छे संबंध और दक्षिण कोरिया के अमेरिका के ईरान को परमाणु निरस्त्रीकरण करने के प्रयासों में शामिल होने से इनकार को वजह बताया। यह घोषणा वार्षिक अमेरिका-दक्षिण कोरिया सैन्य अभ्यास शुरू होने से कुछ घंटे पहले की गई। हालांकि, दक्षिण कोरिया ने कहा कि अभ्यास निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जारी रहेंगे। उल्ची फ्रीडम शील्ड अभ्यास 17 से 27 अगस्त तक होने हैं और इनमें करीब 18,000 दक्षिण कोरियाई सैनिक हिस्सा ले रहे हैं।

राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच ट्रुथ सोशल पर कहा कि वह दक्षिण कोरिया के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यासों से खुश नहीं हैं। उन्होंने कहा कि ये अभ्यास महंगे हैं और अमेरिका इनकी लागत का बड़ा हिस्सा वहन करता है। उन्होंने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ को अभ्यासों में बड़ी कटौती करने का निर्देश दिया है। उन्होंने दक्षिण कोरिया के ईरान संबंधी अमेरिकी प्रयासों में शामिल होने से इनकार की भी आलोचना की। श्री ट्रम्प न कहा कि उन्होंने दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति से ईरान के परमाणु निरस्त्रीकरण के प्रयास में शामिल होने को कहा था, लेकिन सियोल ने इससे इनकार कर दिया।दक्षिण कोरिया के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि सैन्य अभ्यास पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार होंगे।

इन अभ्यासों का उद्देश्य संभावित उत्तर कोरियाई आक्रामकता से निपटने के लिए दोनों देशों की सैन्य तैयारियों को मजबूत करना है।उत्तर कोरिया ने इन अभ्यासों की निंदा करते हुए इन्हें आक्रामक युद्ध की तैयारी बताया है और जवाबी कार्रवाई की धमकी दी है। प्योंगयांग ने हाल में बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण भी किए हैं।

राष्ट्रपति ट्रंप की घोषणा श्री किम जोंग उन के साथ उनकी कूटनीतिक नजदीकी के बीच हुई है। श्री ट्रंप और किम ने उनके पहले कार्यकाल में कई उच्चस्तरीय बैठकें की थीं लेकिन उत्तर कोरिया के परमाणु निरस्त्रीकरण को लेकर वार्ता 2019 में टूट गई थी। जून 2019 में ट्रंप सैन्य सीमांकन रेखा पार कर उत्तर कोरिया में प्रवेश करने वाले पहले मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपति बने थे। दक्षिण कोरिया और अमेरिका सात दशक से अधिक समय से सैन्य सहयोगी हैं। दक्षिण कोरिया में करीब 28,500 अमेरिकी सैनिक तैनात हैं। अमेरिकी अधिकारियों ने कहा है कि उत्तर कोरिया द्वारा रूस के यूक्रेन युद्ध में समर्थन के कारण उसके सैनिकों को आधुनिक युद्ध का महत्वपूर्ण अनुभव मिला है।

श्री ट्रंप पहले भी दक्षिण कोरिया के साथ सैन्य अभ्यासों की लागत और अमेरिकी सैनिकों की तैनाती पर सवाल उठाते रहे हैं। वर्ष 2018 में उन्होंने श्री किम जोन उन के साथ कूटनीतिक प्रयासों के दौरान बड़े अमेरिका-दक्षिण कोरिया सैन्य अभ्यासों को निलंबित कर दिया था और उन्हें उकसावे वाला बताया था।

लखीसराय के अशोक धाम मंदिर में भगदड़, सात महिला श्रद्धालुओं की मौत, कई घायल

लखीसराय। बिहार के लखीसराय जिले में प्रसिद्ध अशोक धाम मंदिर में सोमवार सुबह सावन की तीसरी सोमवारी के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ जुटने के दौरान भगदड़ मच गई। हादसे में सात महिला श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि एक दर्जन से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। घायलों को उपचार के लिए अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। सुबह से ही मंदिर में जलाभिषेक के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी हुई थी। इसी दौरान मंदिर के आसपास बिजली का एक पोल गिरने और करंट फैलने की अफवाह के बाद अचानक अफरा-तफरी मच गई। भीड़ के दबाव में बैरिकेडिंग टूटने की बात भी सामने आई है। हालांकि हादसे की वास्तविक वजह की जांच की जा रही है। अधिकारियों के अनुसार, बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के एक साथ पहुंचने से भीड़ का दबाव बढ़ गया था। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक स्थिति कुछ ही समय में बेकाबू हो गई और लोग एक-दूसरे के ऊपर गिरने लगे। प्रशासन और पुलिस की टीमें मौके पर पहुंचीं तथा राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया।

हादसे में सात महिलाओं की मौत की पुष्टि जिला प्रशासन की ओर से की गई है। घायलों की संख्या को लेकर अलग-अलग शुरुआती रिपोर्टें सामने आई हैं, इसलिए प्रशासन की अंतिम संख्या का इंतजार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने हादसे पर गहरा दुख जताते हुए मृतकों के परिजनों को चार-चार लाख रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की है। उन्होंने जिला प्रशासन को घायलों के समुचित उपचार और राहत कार्यों के निर्देश दिए हैं।

मृत समझकर कर दिया था अंतिम संस्कार, जिंदा मिला युवक

धमतरी। छत्तीसगढ़ के धमतरी में शव की पहचान से जुड़ा एक असामान्य मामला सामने आया है। जिस युवक को मृत समझकर परिजनों ने एक क्षत-विक्षत शव का अंतिम संस्कार कर दिया था और मृत्यु के बाद की सभी रस्में भी पूरी कर ली थीं, वही युवक बाद में धमतरी में जीवित मिला। युवक के मिलने के बाद अब 28 जुलाई को सेमरा नाला के पास बरामद शव की वास्तविक पहचान का सवाल खड़ा हो गया है।

सोमवार को मिली जानकारी के अनुसार बलौदाबाजार जिले के ग्राम सुकली बरेली निवासी 28 वर्षीय मोतीलाल विश्वकर्मा पिछले माह से घर से लापता था। परिजन लगातार उसकी तलाश कर रहे थे। इसी बीच 28 जुलाई को सेमरा नाला के पास एक क्षत-विक्षत शव बरामद हुआ। परिजनों ने शव की पहचान मोतीलाल के रूप में की, जिसके बाद उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

परिवार ने मोतीलाल की मृत्यु मानकर अंतिम संस्कार के बाद होने वाले सभी क्रिया-कर्म भी पूरे कर लिए थे। मुंडन संस्कार सहित अन्य रस्में पूरी होने के बाद परिजनों को विश्वास था कि मोतीलाल की मौत हो चुकी है।

इस बीच 14 अगस्त को धमतरी के संबलपुर मोड़ स्थित पेट्रोल पंप के पास एक युवक बैठा हुआ मिला। उसकी स्थिति को देखते हुए वरदान परमार्थ सेवा समिति के सदस्य पप्पू साहू ने मदद की और इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के शिवा प्रधान से संपर्क किया। इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के शिवा प्रधान ने बताया कि युवक विक्षिप्त अवस्था में मिला था। उसकी स्थिति को देखते हुए उसे सुरक्षित अस्पताल पहुंचाया गया। पहचान की कोशिश के दौरान उसके पास मिले दस्तावेजों से पता चला कि वह बलौदाबाजार जिले का रहने वाला है। इसके बाद पुलिस की मदद से उसके परिजनों से संपर्क किया गया।

पुलिस के माध्यम से सूचना मिलने पर परिजनों को पता चला कि युवक मोतीलाल विश्वकर्मा ही है। इसके बाद शिवा प्रधान, पप्पू साहू और डोमन साहू मोतीलाल को लेकर उसके गांव पहुंचे। लंबे समय बाद मोतीलाल को जीवित देखकर परिजन भावुक हो गए।

मोतीलाल के जीवित मिलने के साथ ही मामला उलझ गया है कि जिसका अंतिम संस्कार किया गया वह कौन था। पुलिस के लिए सबसे महत्वपूर्ण सवाल 28 जुलाई को सेमरा नाला के पास मिले क्षत-विक्षत शव की वास्तविक पहचान का है। परिजनों से शव की पहचान में चूक हुई अथवा इसके पीछे कोई अन्य कारण है, यह जांच के बाद स्पष्ट हो सकेगा।

फिलहाल मोतीलाल के सकुशल मिलने से परिवार को राहत मिली है, वहीं जिस अज्ञात व्यक्ति के शव का मोतीलाल समझकर अंतिम संस्कार किया गया, उसकी पहचान पुलिस के सामने प्रमुख चुनौती बन गई है।

उल्लेखनीय है कि इस तरह की यह पहली घटना नहीं है। हनुमानगढ़ जिले के भिरानी पुलिस थाना क्षेत्र में भी एक युवती की अज्ञात लाश को अपनी पुत्री का शव मानकर अन्तिम संस्कार कर दिया गया था और वह युवती आरोपितों के पास से जीवित मिल गयी थी।

ओवैसी ने अरुणाचल प्रदेश में चीन सीमा की स्थिति को लेकर केंद्र से किया सवाल

हैदराबाद। एआईएमआईएम अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने अरुणाचल प्रदेश में चीन सीमा पर बनी स्थिति को लेकर नरेंद्र मोदी सरकार से सवाल किया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि केंद्र की लगातार चुप्पी से गंभीर चिंताएं पैदा हो गई हैं।

श्री ओवैसी ने सोमवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में पूछा क्या पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) ने हाल ही में भारतीय सेना के गश्ती दल को उन इलाकों में जाने से रोका है जहाँ वे पहले गश्त करते थे और क्या उसने भारतीय इलाके में भारतीय सेना द्वारा बनाए गए किसी अस्थायी ढांचे को हटाया है।

उन्होंने यह भी सवाल किया कि क्या पीएलए ने उस इलाके में टेंट लगाए हैं जहाँ भारतीय गश्ती दल पहले काम करती था और क्या सरकार सेना से कह रही है कि वह उस इलाके में पेट्रोलिंग के अधिकारों के लिए ज़ोर न दे, ताकि अगले महीने दिल्ली में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की प्रस्तावित यात्रा से पहले सब कुछ सामान्य दिखे।

संपादकीय | क्या महज औपचारिकता बन गया है सदन?

जिस तरह जनहित से जुड़े मामलों पर विधेयकों को बिना बहस या चर्चा के ही पारित कर दिए जाने की परंपरा चल पड़ी है, उसका सीधा असर जनता के अधिकारों और लोकतंत्र की सेहत पर पड़ेगा।

एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में संसद जनहित से जुड़े मुद्दों पर बहस का सर्वोच्च मंच होता है, तो ऐसे में सरकार और विपक्ष की जिम्मेदारी हो जाती है कि वे इसकी उपयोगिता और महत्त्व को कायम रखें। विडंबना यह है कि जब भी संसद का सत्र शुरू होता है, किसी न किसी मुद्दे पर सरकार और विपक्ष के बीच असहमति एक टकराव में तब्दील हो जाती है और दोनों सदनों का ज्यादातर समय बेकार चला जाता है।

एक ओर विपक्षी पार्टियां सरकार से किसी मुद्दे पर जवाब की मांग करती हैं, तो दूसरी ओर सरकार आमतौर पर ऐसी मांगों की अनदेखी करने का रुख अख्तियार कर लेती है। नतीजतन, हंगामे और सदन को स्थगित किए जाने के समांतर विपक्ष के बहिर्गमन के बीच संसद की कार्यवाही महज औपचारिकता बन कर रह जाती है। जबकि इसी बीच सरकार अपनी सुविधा के मुताबिक ऐसे मसलों पर तैयार विधेयकों को भी बिना चर्चा के पारित करा लेती है, जिन पर विपक्षी दलों के विचार और व्यापक बहस की जरूरत होती है। इस सत्र में कई विधेयकों को पारित करने में इतना कम वक्त लगा, मानो उसके लिए महज औपचारिकता निभाई गई हो। सवाल है कि इस तरह की स्थितियों में संसद और लोकतंत्र की क्या अहमियत रह जाती है। मानसून सत्र के तीन सप्ताह जिस तरह सिर्फ हंगामे और विपक्ष के बहिर्गमन के दौरान बार-बार स्थगित होते हुए गुजर गए, उससे एक

बार फिर यह सवाल उठा है कि क्या संसद को अब सिर्फ दिखावे का ठिकाना मान लिया गया है! वरना क्या वजह है कि एक ओर विपक्षी दलों की ओर से पूरे सत्र के दौरान नीट प्रश्नपत्र लीक, राम मंदिर दान राशि में कथित गड़बड़ी और विद्यार्थियों के विरोध प्रदर्शन पर पुलिस की कार्रवाई के मुद्दे पर सरकार को घेरा गया, संबंधित और जिम्मेदार मंत्रियों से जवाबदेही की मांग की गई, वहीं सरकार ने इन मसलों पर एक विचित्र चुप्पी ओढ़े रखी।

खासतौर पर दिल्ली में प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस की बेरहमी और पैलेट गन चलाने के सवाल पर विपक्ष ने जवाब मांगा, लेकिन गृह मंत्री ने आखिरी दिन इसे लेकर थोड़ी सक्रियता दिखाई, जो प्रकारांतर से बेमानी साबित हुई। अगर यही रुख पहले जाहिर किया गया होता, तो संभव है कि संसद में कुछ मुद्दों और पेश किए गए विधेयकों पर बहस की गुंजाइश निकल पाती। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अलग-अलग मुद्दों पर सरकार और विपक्ष के बीच गतिरोध कायम रहने की वजह से कार्य उत्पादकता लोकसभा में महज उन्नीस फीसद और राज्यसभा में उनतालीस फीसद रही। अब इस बात पर चिंता जताने में शायद सभी दल शामिल होंगे कि संसद की कार्यवाही नहीं चलने की वजह से करोड़ों रुपए बर्बाद हो गए। यह समझना मुश्किल है कि संसद की कार्यवाही के दौरान मुद्दों पर मत-विरोध उभरने, सदन स्थगित किए जाने या विपक्ष के बहिर्गमन के तमाम उदाहरण सामने रहते हुए भी सरकार की ओर से कोई ऐसी पहल नहीं दिखती कि वह सत्र की शुरुआत से पहले सभी विपक्षी दलों को विश्वास में ले और जरूरी मुद्दों पर चर्चा सुनिश्चित करे। जिस तरह जनहित से जुड़े मामलों पर विधेयकों को बिना बहस या चर्चा के ही पारित कर दिए जाने की परंपरा चल पड़ी है, उसका सीधा असर जनता के अधिकारों और लोकतंत्र की सेहत पर पड़ेगा।

शिक्षिका ने 10 छात्राओं को बेंत से पीटा

विद्यालयों में किसी भी स्थिति में शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताड़ित किए जाने को शिक्षा का अधिकार अधिनियम का उल्लंघन माना गया है। फिर भी यह बात वरिष्ठ शिक्षिका भूल गईं। देशभर में स्कूली बच्चों को शारीरिक दंड देने पर कड़ी पाबंदी है। बावजूद इसके आए दिन राज्यों से ऐसी घटनाएं सामने आती हैं, जिनसे लगता है कि शिक्षकों को न तो अपने दायित्व का बोध है, न शिक्षा का अधिकार अधिनियम की धारा 17 (एक) की फिक्र। विद्यालयों में शिक्षक आज भी विद्यार्थियों को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने से बाज नहीं आ रहे। बीती बीस जुलाई को तमिलनाडु के तेनकासी जिले के एक सरकारी स्कूल में दसवीं कक्षा की छात्राओं के साथ जो बर्ताव किया गया, वह उनके लिए एक बुरे सपने की तरह था। खबरों के मुताबिक आरोपी शिक्षिका ने दस छात्राओं को बेंत से इस कदर पीटा कि उनके हाथों में गंभीर चोटें आईं और वे परीक्षा देने में भी असमर्थ हो गईं। दरअसल, शिक्षिका ग्यारहवीं कक्षा को पढ़ा रही थीं, तभी बगल की दसवीं कक्षा में शोरगुल से वे इतनी नाराज हो गईं कि उन्होंने कक्षा में जाकर छात्राओं को बुरी तरह पीटा। इस दौरान उन्होंने शिक्षण और स्कूल परिसर के सभी नियमों को ताक पर रख दिया। गौरतलब है कि विद्यालयों में किसी भी स्थिति में शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताड़ित किए जाने को शिक्षा का अधिकार अधिनियम का उल्लंघन माना गया है। फिर भी यह बात वरिष्ठ शिक्षिका कैसे भूल गईं? जब वे खुद इस अधिनियम का पालन नहीं कर रहीं, तो विद्यालय का परिवेश बच्चों के लिए कैसा होगा? पीड़ित छात्राओं में से एक छात्रा की मां की शिकायत के बाद पुलिस ने शिक्षिका के खिलाफ मामला दर्ज किया। बेंत से जख्मी हुई छात्राओं को चिकित्सा सहायता दी गई, लेकिन सवाल यह है कि छात्राओं के मन-मस्तिष्क पर लगे जख्म कैसे भरेंगे। आमतौर पर देखा गया है कि विद्यार्थियों पर पिटाई का न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक स्तर पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

आज का कार्टून

तुर्की-पाकिस्तान-सऊदी रक्षा समझौता

तुर्की, पाकिस्तान और सऊदी अरब का मक्का रक्षा समझौता साझा सुरक्षा की जगह उनके अलग-अलग तात्कालिक स्वार्थों पर आधारित है। रणनीतिक विरोधाभासों और कमजोर आधार के कारण इसका दीर्घकालिक प्रभाव सीमित रहेगा। बहुस्तरीय गठबंधन अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता तो रखते हैं, लेकिन उनका प्रभाव तभी दीर्घकालीन होता है, जब उनके पीछे साझा रणनीतिक दृष्टि, पारदर्शिता, प्रतिबद्धता और स्थायी हित हों।

केवल तात्कालिक स्वार्थों पर आधारित गठबंधन अक्सर बदलती परिस्थितियों के साथ कमजोर पड़ जाते हैं। मक्का में तुर्की, पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच हुआ संयुक्त रक्षा समझौता इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है। इसका मूल सिद्धांत है कि तीनों में से किसी एक देश पर सशस्त्र हमला सभी पर हमला माना जाएगा। पहली नजर में यह इस्लामिक दुनिया में सामूहिक सुरक्षा की नई शुरुआत जैसा दिखाई देता है, लेकिन इसकी वास्तविकता इससे कहीं अधिक जटिल है।

इसके केंद्र में पाकिस्तान की सुरक्षा बेचैनी, तुर्की की बढ़ती रणनीतिक महत्त्वाकांक्षा और सऊदी अरब की सुरक्षा चिंताएं नजर आती हैं। इस नए समीकरण में तीन देशों की अलग-अलग जरूरतें दिखाई देती हैं। तुर्की दुनिया में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है। ईरान के खिलाफ सऊदी अरब सुरक्षा चाहता है, जबकि वित्तीय बदहाली से जूझते पाकिस्तान को आर्थिक सहारे की जरूरत है। यही तीनों जरूरतें इन्हें इस समय एक-दूसरे से जोड़ रही हैं।

तुर्की को केवल एक मुसलिम देश के रूप में देखना उसकी विदेश नीति को समझने में बड़ी भूल होगी। वह नाटो का सदस्य है और यूरोप का हिस्सा है, रूस के साथ रणनीतिक संबंध रखता है और ईरान से प्रतिस्पर्धा एवं सहयोग भी करता है। वह अरब दुनिया में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश में है तथा मध्य एशिया में अपने राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक शक्ति का इस्तेमाल करता है।

तुर्की के राष्ट्रप्रमुख एर्दोआन रणनीतिक स्वायत्तता चाहते हैं, वे किसी एक शक्ति के पीछे चलने को तैयार नहीं हैं। तुर्की, अमेरिका से संबंध रखता है, लेकिन उस पर निर्भर नहीं रहना चाहता। वह रूस से व्यापार करता है, लेकिन उसके प्रभाव के अधीन नहीं होना चाहता। वह अरब देशों से प्रतिस्पर्धा करता है, लेकिन उन्हीं देशों की पूंजी और बाजार भी चाहता है।

यह भी दिलचस्प है की तुर्की और सऊदी अरब की प्रतिद्वंद्विता को दुनिया ने देखा है, वे मध्य-पूर्व में एक-दूसरे के प्रभाव को चुनौती देते रहे हैं। 'मुसलिम ब्रदरहुड' को लेकर दोनों के बीच गहरी खाई रही है। सीरिया और मिस्र की राजनीति में दोनों के रास्ते अलग थे। कतर संकट में भी तुर्की ने दोहा का साथ दिया, जबकि रियाद उसके विरोध में खड़ा था। तुर्की में बेरोजगारी बड़ा मसला है और अब वह सऊदी अरब में रणनीतिक अवसर ढूंढ़ रहा है।

वह सऊदी अरब को हथियार बेचना चाहता है और वहां से व्यापक निवेश की इच्छा रखता है। इसलिए इस उभरते सुरक्षा समीकरण को अभी नाटो जैसी संस्थागत सैन्य व्यवस्था का नाम देना सही नहीं है। नाटो की ताकत केवल उसके सदस्य देशों की सैन्य क्षमता में नहीं, बल्कि साझा संस्थाओं, एकीकृत कमान संरचना, नियमित सैन्य सहयोग, स्पष्ट दायित्वों और दशकों में विकसित सामूहिक सुरक्षा की राजनीतिक प्रतिबद्धता में है।

सऊदी अरब के पास पैसा है, ऊर्जा है, धार्मिक प्रतिष्ठा है और अरब दुनिया में प्रभाव भी है। मगर स्वतंत्र सैन्य सुरक्षा क्षमता उसके लिए बड़ी चुनौती है और वहां का नेतृत्व अब इस दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। इराक युद्ध, यमन संघर्ष, ड्रोन हमले और ईरान के साथ बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने सऊदी अरब को गहरी चिंता में डाल दिया है। सऊदी अरब अब तेल के साम्राज्य से आगे बढ़कर पूंजी, तकनीक, धर्म और रणनीतिक शक्ति के सहारे एक निर्णायक क्षेत्रीय शक्ति बनना चाहता है।

उसने अमेरिका से संबंध रखते हुए चीन के साथ आर्थिक तालमेल बढ़ाया है और रूस से भी उसे कोई परहेज नहीं है। उसने तुर्की और पाकिस्तान के साथ सुरक्षा सहयोग मजबूत कर ईरान पर दबाव बनाने की कोशिश की है। तुर्किये का सपना है कि वह फिर से मध्य-पूर्व की निर्णायक शक्ति बने। वहीं पाकिस्तान चाहता है कि उसकी सैन्य शक्ति और परमाणु क्षमता उसे मुसलिम दुनिया और दक्षिण एशिया में अधिक रणनीतिक महत्त्व दिलाए तथा उसकी आर्थिक कमजोरियों को खाड़ी देशों की पूंजी और साझेदारियों से सहारा मिले। मगर इन तीनों देशों के समझौते की वास्तविक मजबूती अभी भविष्य के संकटों में परखी जानी बाकी है। विरोधाभासों और आंतरिक चुनौतियों से घिरा पाकिस्तान अपनी विदेश नीति में बार-बार बाहरी शक्तियों का सहारा तलाशता रहा है। शीतयुद्ध के दौर में वह अमेरिका की रणनीतिक जरूरतों का महत्त्वपूर्ण सैन्य साझेदार बना और बदले में उसे आर्थिक सहायता, हथियार एवं सुरक्षा सहयोग मिला। मगर इस साझेदारी की कीमत भी पाकिस्तान को चुकानी पड़ी। अफगान युद्ध, कट्टरपंथ, आतंकवाद और आंतरिक अस्थिरता ने धीरे-धीरे उसके सामाजिक और सुरक्षा ढांचे को प्रभावित किया।

पाकिस्तान की समस्या यह है कि उसकी विदेश नीति अक्सर आंतरिक कमजोरी की भरपाई बाहरी गठबंधनों के सहारे करने की कोशिश करती दिखाई देती है। अमेरिका के बाद चीन, खाड़ी देशों और अब तुर्किये के साथ उसकी बढ़ती निकटता इसी प्रवृत्ति का हिस्सा है। पाकिस्तान की सबसे बड़ी सुरक्षा चिंता भारत है। अफगानिस्तान उसकी पश्चिमी सीमा पर चुनौती है। चीन उसका सबसे महत्त्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार है।

पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था लगातार बाहरी सहायता और निवेश की तलाश में रहती है। धार्मिक विचारधारा से परे तुर्की, पाकिस्तान और सऊदी अरब का सबसे दिलचस्प पक्ष 'मुसलिम ब्रदरहुड' है। हालांकि, इस मामले में तुर्किये और सऊदी अरब का दृष्टिकोण कभी एक जैसा नहीं रहा।

तुर्की ने 'मुसलिम ब्रदरहुड' से जुड़े राजनीतिक समूहों के साथ सहानुभूति दिखाई, जबकि सऊदी ने उसे अपने लिए राजनीतिक खतरा माना। ऐसे में जाहिर है यह गठबंधन धार्मिक विचारधारा पर नहीं बना है। अगर 'मुसलिम ब्रदरहुड' वास्तव में इस गठबंधन की वैचारिक आधारशिला होता, तो तुर्की और सऊदी अरब एक साथ खड़े नहीं होते।

इसलिए इस गठबंधन का वास्तविक आधार इस्लाम नहीं, बल्कि अपने-अपने स्वार्थ हैं। सऊदी अरब की ईरान से पुरानी प्रतिस्पर्धा है। तुर्की और ईरान मध्य-पूर्व में प्रभाव के लिए एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी भी हैं। पाकिस्तान, ईरान से सीमा साझा करता है और किसी भी संघर्ष के दौरान सबसे कठिन स्थिति में आ सकता है। इसलिए इस नए गठबंधन के पीछे ईरान की छाया को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

इस गठबंधन की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि तीनों देशों की रणनीतिक प्राथमिकताएं अलग हैं। सऊदी अरब की मुख्य चिंता ईरान और खाड़ी की सुरक्षा है, जबकि पाकिस्तान की सुरक्षा नीति का केंद्र भारत और दक्षिण एशिया है। तुर्किये के हित मध्य-पूर्व से आगे काकेशस, भूमध्यसागर, रूस और नाटो तक फैले हैं। ऐसे में किसी संकट की स्थिति में तीनों देशों की प्राथमिकताएं एक जैसी रहेंगी, यह निश्चित नहीं है।

इस गठबंधन की असली ताकत समझौते पर हस्ताक्षर में नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में एक-दूसरे के साथ खड़े रहने की क्षमता से तय होगी। पश्चिम एशिया में संघर्ष के दौरान पाकिस्तान की मध्यस्थ की भूमिका और भारत-सऊदी अरब के बीच ऊर्जा, निवेश, व्यापार तथा रणनीतिक संबंधों की मजबूती से पता चलता है कि इस गठबंधन की सीमाएं स्पष्ट है। संकट की घड़ी में राष्ट्रीय हित साझा सुरक्षा प्रतिबद्धताओं पर भारी पड़ सकते हैं।

सऊदी अरब की मुख्य चिंता ईरान और खाड़ी की सुरक्षा है, जबकि पाकिस्तान की सुरक्षा नीति का केंद्र भारत और दक्षिण एशिया है। तुर्किये के हित मध्य-पूर्व से आगे काकेशस, भूमध्यसागर, रूस और नाटो तक फैले हैं। ऐसे में किसी संकट की स्थिति में तीनों देशों की प्राथमिकताएं एक जैसी रहेंगी, यह निश्चित नहीं है। इस गठबंधन की असली ताकत एक-दूसरे के साथ खड़े रहने की क्षमता से तय होगी।

अमेरिका ने भारत समेत दुनिया के 40 से ज्यादा देशों की एक लिस्ट बनाई है, और उन पर चीन को भारी अमेरिकी टैरिफ से बचने में मदद करने वाले एक गुप्त नेटवर्क में शामिल होने का आरोप लगाया है। पीटीआई की रिपोर्ट बताती है कि अमेरिका के अधिकारियों ने ऐसे शिपमेंट का पता लगाने और उन पर कार्रवाई करने के लिए ढ्ढ का उपयोग करने की योजना भी बताई है

स्वतंत्रता दिवस जब भी पास आता है, मुझे एक चीज बहुत तकलीफ देती है। वह है छोटे बच्चों को तिरंगा बेचते हुए देख कर जो दिल्ली और मुंबई की ट्रैफिक बत्तियों पर खड़े दिखते हैं। इन बच्चों के चेहरों पर थकावट नजर आती है, अक्सर इन बच्चों के बाल बेरंग होते हैं कुपोषण की वजह से। अक्सर नंगे पांव होते हैं और इनके कपड़े दर्शाते हैं। इनके माता-पिता की गरीबी। कई बार बच्चे इतने छोटे होते हैं कि उनके हाथ गाड़ी की खिड़की तक नहीं पहुंचते हैं, कई बार बारिश से भीगे होते हैं वे तिरंगे झंडे, जिन्हें बेचने की कोशिश में रहते हैं।

आजादी के 8 दशक बाद भी बदहाल सरकारी स्कूल

तवलीन सिंह

मैं हमेशा उनसे ज्यादा पैसों में खरीद लेती हूं तिरंगे, यह जानते हुए कि उनसे कोई या तो बड़ा भाई छीन लेने वाला है पैसे या कोई और। इन बच्चों में हर साल दिखती है मुझे अपने देश की शर्मनाक कहानी। बहुत अच्छा लगा जब इस साल काकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके ने वीडियो डाला इंस्टाग्राम पर यह कहते हुए कि इन बच्चों को सड़कों पर नहीं, स्कूलों में होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी देश भर में शुरू कर रही है अभियान ग्रामीण स्कूलों को सुधारने के लिए। इतना बड़ा अभियान सफल होगा कि नहीं मैं नहीं जानती, लेकिन इतना जानती हूं कि हमारे राजनेताओं में थोड़ी भी शर्म होती, तो इस अभियान को उन्होंने बहुत पहले शुरू किया होता। देशभक्ति के उनके नारे खोखले लगते हैं जब साफ जाहिर है कि भारत माता का हाल इतना बुरा है कि हम अपने बच्चों को ठीक से पढ़ा भी नहीं सकते हैं स्वतंत्रता के करीब आठ दशक बाद। ग्रामीण स्कूल अकेले नहीं हैं जो बिल्कुल बेहाल हैं। महानगरों की झुग्गी बस्तियों के स्कूलों में झांक कर देखिए, तो उनकी कक्षाओं में भी आप पाएंगे टूटी पुरानी दीवारें और मेज कुर्सियां अगर मेज कुर्सियां होती भी हैं। ऊपर से अगर आप दो मिनट इन स्कूलों के

शिक्षकों से बात करने की तकलीफ करते हैं, तो स्पष्ट हो जाएगा बहुत जल्दी कि सुधार लाना है अगर शिक्षा में, तो पहला काम होना चाहिए इन शिक्षकों का प्रशिक्षण। इसके लिए जरूरत है लाखों प्रशिक्षण केंद्रों की जिसकी बात अभी तक एक भी आला नेता नहीं कर रहा है। मोदी भक्त और भाजपा के प्रवक्ता सीना चौड़ा करके याद दिलाते फिरते हैं कि मोदी ही हैं जिन्होंने 'परीक्षा पे चर्चा' जैसे कार्यक्रम शुरू किए। कभी इस टीवी प्रोग्राम पर ध्यान दीजिए अगर, तो फौरन दिखेगा आपको कि जिन बच्चों का मैंने जिक्र करके इस लेख को शुरू किया है, उनका नामोनिशान नहीं दिखेगा प्रधानमंत्री के इस कार्यक्रम में। दिखेंगे आपको ऐसे बच्चे जिनकी वर्दियां साफ-सुथरी होती हैं और जिनके पांव में जूते होते हैं। बिल्कुल ऐसे ही बच्चे आपको दिखेंगे श्रोताओं में जब लाल किले के प्राचीर से प्रधानमंत्री स्वतंत्रता दिवस पर भाषण देते हैं। एक पूर्व मोदी भक्त होने के नाते अपनी सफाई में कहना चाहती हूं कि मेरी भक्ति तब शुरू हुई थी, जब लाल किले से मोदी ने अपने पहले भाषण में स्वच्छ भारत योजना का एलान किया था। जब उस प्राचीर से उन्होंने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा बुलंद किया था और उस प्राचीर से उन्होंने अपने सांसदों और विधायकों को नसीहत दी थी कि अपने चुनाव क्षेत्रों में जब वापस लौटेंगे, तो कम से कम दो गांव चुन कर उनको आदर्श गांव बनाने की कोशिश करें। यानी ऐसे गांव जिन में शहरों जैसी सुविधाएं उपलब्ध हों। प्रधानमंत्री ने वाराणसी के देहात में जिस गांव को 'माडल' बनाया, उसको मैंने देखा 2019 में आम चुनाव के दौरान। यकीन मानिए हैरान रह गई थी मैं, जब देखा कि इस गांव में अच्छे स्कूलों के अलावा अच्छी सड़कें थीं, बिजली-पानी की पूरी सुविधा थी और दो बैंक भी थे। मगर क्या प्रधानमंत्री ने अभी तक देखा नहीं है कि उनके अलावा शायद ही कोई मंत्री या सांसद होगा उनकी पार्टी में जिसने अपने चुनाव क्षेत्र में थोड़ी भी कोशिश की है कभी इस तरह के सुधार लाने की? क्या प्रधानमंत्री ने कभी गौर किया है कि उनके आसपास के जो नेता हैं उनको सिर्फ अपने परिवार की ही चिंता रहती है? ध्यान दिया होता बहुत पहले, तो आज यह हाल न होता कि देश के बच्चे उन बुनियादी सुविधाओं की मांग कर रहे हैं जो उनका हक है। जंतर मंतर के प्रदर्शन के बाद जगह-जगह दिखे हैं जेन-जी के अलावा जेन-अल्फा बच्चे जो अपने स्कूलों के बाहर सड़कों पर निकल कर याद दिलाते हैं कि उनके स्कूल में न शिक्षक हैं न शौचालय, न पीने का साफ पानी और न कोई और बुनियादी सुविधा। काकरोच जनता पार्टी न जन्म लेती, तो देश में किसी भी राज्य में इन बच्चों की आवाज कोई नहीं उठाता। दोष हम मीडिया वालों का भी है इसलिए कि जब से ये प्रदर्शन शुरू हुए हैं शिक्षा की मांगों को लेकर, हमने सिर्फ इसके पीछे राजनीति पर ही ध्यान दिया है। पिछले सप्ताह मुझे एक टीवी चर्चा में बुलाया था एक अंग्रेजी चैनल ने और मुझे दुख हुआ यह देखकर कि एंकर की खोजी पत्रकारिता सिर्फ यहां तक थी कि वह किसी तरह साबित करे कि राहुल गांधी ने रांची वाले प्रदर्शन पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि झारखंड सरकार में कांग्रेस के भी मंत्री हैं। क्या यह सबसे बड़ा मुद्दा है इस वक्त? राजनीति की बातें हमको छोड़ देनी चाहिए राजनीतिकों के लिए। हम मीडियावालों को बातें करनी चाहिए सिर्फ इस पर कि भारत के सरकारी स्कूलों का इतना बुरा हाल क्यों है? असली स्वतंत्रता दिवस तब आएगा, जब शहरों की सड़कों पर नहीं दिखेंगे बेहाल और भूखे बच्चे अपने नन्हे हाथों में तिरंगा लिए हुए। गुरुवार को संसद का मानसून सत्र समाप्त हो गया। आखिरी दिनों तक वही तस्वीर बनी रही जो पिछले डेढ़ दशक से हर सत्र की पहचान बन चुकी है यानी हंगामा, स्थगन, और जल्दबाजी में पारित होते विधेयक। सत्र के अंतिम चरण में एफसीआरए संशोधन विधेयक को लेकर सदन में तीखी बहस हुई। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने इसे संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजने का प्रस्ताव रखा, कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने विरोध करते हुए इसे वापस लेने की मांग की, और अंततः शोर-शराबे के बीच सदन ने ध्वनि मत से इस विधेयक को संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजने की मंजूरी दी।

जब घर पर न लगे मन, तो इन 3 हॉबीज से संवारें अपना खाली वक्त

घर पर खाली समय में बोरियत को दूर करने के लिए तीन माइंडफुल हॉबीज अपनाई जा सकती हैं। जानते हैं ये तीनों एक्टिविटी कैसे आपको फायदो पहुंचा सकती हैं?

जब अपनी बिजी लाइफ में से हमें थोड़ा सा खाली वक्त मिलता है, तो घर पर बैठे-बैठे मन अजीब सी बोरियत या उदासी से घिर जाता है। ऐसे समय को ज्यादातर महिलाएं फोन स्क्रॉल करने में बिताती है। जबकि, खुद को किसी क्रिएटिविटी और शांत काम में लगाना, मानसिक सेहत के लिए वरदान साबित होता है। बता दें, कुछ ऐसी माइंडफुल हॉबीज हैं, जो न सिर्फ आपका बेहतरीन टाइमपास कराएंगी, बल्कि आपके अंदर एक नई पॉजिटिव एनर्जी और खुशी भी लेकर आएंगी। ऐसे में इनके बारे में पता होना जरूरी है। आज हम आपको बताएंगे कि आप खाली समय में किन चीजों को अपनी हॉबीज बना सकती हैं।

गार्डनिंग

घर के खाली कोने या बालकनी में पेड़-पौधे लगाना न केवल आपके मन को शांत कर सकता है बल्कि ये एक सबसे खूबसूरत तरीका है, खुद को खुश रखना। जब आप मिट्टी को छूते हैं, बीजों को बोते हैं और उन्हें रोज बढ़ते हुए देखते हैं, तो इससे स्ट्रेस तेजी से कम होता है। गार्डनिंग हमें नेचर से जोड़ती है। सुबह-सुबह अपने हाथ से उगाए गए फूलों या हरी-भरी पत्तियों को देखना आपके पूरे दिन को ताजगी से भर देता है।

जर्नलिंग

जर्नलिंग का सीधा मतलब है अपनी फीलिंग, सोच और एक्सपीरियंस को एक डायरी में लिखना है। कई बार घर पर अकेले रहने से दिमाग में विचारों का तूफान चलने लगता है। ऐसे में जब आप पेन उठाकर अपने दिल की बात कागज पर लिखते हैं, तो मन का बोझ पूरी तरह हल्का हो जाता है। आप इसमें अपने दिनभर के अच्छे काम, अपनी फ्यूचर प्लानिंग या उन चीजों की लिस्ट बना सकते हैं, जिनके लिए मन से खुश हैं। इससे आपका कॉन्फिडेंस बढ़ेगा।

एडल्ट कलरिंग

कलरिंग या रंग भरना सिर्फ बच्चों का खेल नहीं है, बल्कि आजकल बड़ों के लिए एडल्ट कलरिंग बुक्स बेहद फेमस हो रही हैं। खूबसूरत डिजाइनों (जैसे मंडाला आर्ट) में अपनी पसंद के रंग भरना एक थेरेपी की तरह काम करता है। जब आप रंग भरते हैं, तो आपका दिमाग पूरी तरह एकाग्र हो जाता है और फालतू बातें नहीं सोचता है। यह आपकी क्रिएटिविटी को जगाने का एक अच्छा तरीका है।

सावन आते ही लौट आती हैं ये परंपराएं

वो मान्यताएं जिन्हें आज भी लोग शौक से निभाते हैं

आज किसी से पूछो की सावन में क्या-क्या होता है, तो यकीनन उत्तर कावड़ यात्रा और शिव भक्ति होगा, लेकिन आपको बता दें कि यह पर्व प्रकृति से जुड़ने, रिश्तों में मिठास घोलने और खुशियां मनाने का भी है।

सावन के महीने को भक्ति, हरियाली, सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। पहले गांवों में इस समय जगह-जगह पर झूले लगाए और लोकगीत गाए जाते थे। हालांकि, बदलते समय के साथ पुरानी ये परंपराएं अब गुम सी होती जा रही हैं। आज हम इस लेख में आपको उन पुरानी परंपराओं और मान्यताओं के बारे में बताने जा रहे हैं, जो इस महीने की जान हैं।

सावन के झूले और कजरी के गीत

पुराने समय में गांव और कस्बें में लड़कियां और महिलाएं एक साथ एकत्र होकर झूला झूलती थीं और कजरी गाया करती थीं। सावन आते ही बाग-बगीचों और घरों के आंगनों में पेड़ों की मजबूत डालियों पर झूले डाल दिए जाते हैं। हालांकि, पहले के मुकाबले अब ये परंपराएं कुछ ही जगहों पर देखने को मिलती हैं। मगर जो बात बड़े पेड़ों पर लगे लकड़ी के पटरे वाले झूले और पोंग मारने में हुआ करता था वह गायब सा हो गया है।

हाथों में हरी चूड़ियां और मेहंदी

सावन में चारों तरफ हरा-भरा दिखाई देता है। इस हरे रंग को समृद्धि, सौभाग्य और प्रकृति के प्रति आभार का प्रतीक माना जाता है। यही कारण है कि सावन के महीने में सुहागिन महिलाएं और लड़कियां हाथों में हरी चूड़ियां पहनती हैं और मेहंदी लगाती हैं।

घेवर बनाने की परंपरा

सावन के महीने का जायका घेवर के बिना अधूरा माना जाता है। उत्तर भारत में सावन के दौरान ही घेवर बनाया और खाया जाता है। इस महीने में सावन की तीज पर नवविवाहित बेटियों के ससुराल में मायके से घेवर, कपड़े, चूड़ियां और श्रृंगार का सामान भेजने की सदियों पुरानी परंपरा है। यह रिवाज रिश्तों को मजबूत करने और बेटी के प्रति प्यार जाहिर करने का एक सुंदर तरीका है।

हरे कपड़े और सुहाग के त्योहार

सावन में पड़ने वाली हरियाली तीज और नाग पंचमी जैसे त्योहारों पर महिलाएं विशेष रूप से हरे रंग की साड़ियां या पारंपरिक परिधान पहनती हैं। इस दिन महिलाएं माता पार्वती और भगवान शिव की पूजा करके अपने परिवार की सुख-समृद्धि और पति की लंबी उम्र की कामना करती हैं।

कांवड़ यात्रा होती है बेहद खास

सावन की सबसे बड़ी और भव्य परंपराओं में से एक है कांवड़ यात्रा। शिवभक्त नंगे पैर गंगाजी या पवित्र नदियों से जल भरकर पैदल यात्रा करते हैं और भगवान शिव के ज्योतिर्लिंगों या स्थानीय शिवालयों में जलाभिषेक करते हैं। यह परंपरा अनुशासन, त्याग, भक्ति और अटूट विश्वास का उदाहरण है।

सावन में घर पर कैसे डालें झूला

आप सावन में अपने घर पर भी झूला डाल सकती हैं। हम आपको आसान तरीका बता रहे हैं-

- **सही जगह चुनें:** मजबूत पेड़ की डाल, मजबूत छत का हुक या लोहे की ग्रिल।
- **मजबूत रस्सी चुनें:** नायलॉन, सूती या जूट की मोटी रस्सी लें।
- **लकड़ी की पटरी या तख्ता:** बैठने के लिए मजबूत लकड़ी का बोर्ड लें।
- **पटरी में छेद करें:** बोर्ड के दोनों ओर रस्सी बांधने के लिए दो-दो छेद बनाएं।
- **रस्सी को मजबूती से बांधें:** अब तख्ते और हुक पर सेफ्टी नॉट (मजबूत गांठ) लगाएं।
- **सजावट करें:** गेंदे के फूलों, आम के पत्तों या सुंदर कपड़ों से झूले को सजाएं।
- **सेफ्टी चेक करें:** झूले पर बैठने से पहले थोड़ा वजन डालकर मजबूती जरूर चेक करें।

सात्विक जीवन और सावन के सोम

सावन के महीने में खान-पान को लेकर भी विशेष नियम निभाए जाते हैं। लोग पूरे महीने प्याज, लहसुन, मांस-मदिरा से दूर रहकर सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं। सावन के सोमवार के व्रत रखने की परंपरा बहुत पुरानी है। इसके पीछे धार्मिक मान्यता तो है ही, साथ ही स्वास्थ्य संबंधी कारण भी है वर्षा ऋतु में पाचन क्रिया धीमी हो जाती है, इसलिए सात्विक और हल्का भोजन करने की सलाह दी जाती है।

सावन में आखिर क्यों हर घर में डाला जाता है झूला

सावन का महीना आते ही चारों ओर हरियाली छा जाती है। पेड़ों पर नए पत्ते आ जाते हैं। मौसम सुहावना हो जाता है। इस दौरान मंदिर से लेकर घरों तक में शिवभक्ति का माहौल रहता है। वहीं, एक और चीज है, जो सावन की पहचान मानी जाती है और वह झूला है। आपने देखा होगा कि सावन में लोगों के घरों में झुले डाल दिए जाते हैं। महिलाएं और लड़कियां सज-धजकर झूला झूलती हैं, सावन के गीत गाती हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर सावन में झूला लगाने की परंपरा कैसे शुरू हुई? इसके पीछे सिर्फ मौसम ही नहीं बल्कि धार्मिक मान्यताएं भी जुड़ी हुई हैं।

सावन को हरियाली, खुशियों और उत्सव का महीना माना जाता है। इस समय मौसम ठंडा और सुहावना होता है। इसलिए पुराने समय से लोग पेड़ों पर झूले डालकर परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताते थे। खासकर महिलाएं और लड़कियां सावन में झूला झूलते हुए लोकगीत गाती थीं। धीरे-धीरे यही परंपरा सावन के सबसे खास रीति-रिवाजों में शामिल हो गई।

माता पार्वती से जुड़ी है सावन में झूला झूलने की परंपरा

धार्मिक मान्यता है कि भगवान शिव ने सावन के महीने में माता पार्वती के लिए झूला लगाया था और उन्हें प्रेम से झूला झुलाया था। इसी वजह से झूला पति-पत्नी के बीच प्यार, सम्मान और अच्छे रिश्ते का प्रतीक भी माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जो दंपति सावन में साथ मिलकर झूला झूलते हैं, उनके रिश्ते में अपनापन और प्रेम बना रहता है। हालांकि, यह धार्मिक मान्यता है और अलग-अलग जगहों पर इसे अलग तरीके से माना जाता है। एक और कहावत सुनने को मिलती है कि सावन में माता पार्वती अपने मायके आईं थीं। वहां, उन्होंने अपने सखियों के साथ झूला लगाया और झूला भी। इस दौरान उन्होंने लोक गीत गाए और खुशियां मनाई। तभी से यह परंपरा चली आ रही है।

भगवान कृष्ण और राधा रानी से भी जुड़ी है मान्यता

सावन में झूला झूलने की परंपरा का संबंध भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी से भी जोड़ा जाता है। ऐसी मान्यता है कि सावन के सुहाने मौसम में भगवान कृष्ण ने राधा रानी को झूला झुलाया था। इसके बाद से कई जगहों पर मंदिरों में राधा-कृष्ण के लिए भी सुंदर झूले सजाए जाते हैं। सावन के दौरान कई मंदिरों में झूलन उत्सव भी मनाया जाता है।

सावन में मंदिरों में सजाए जाते हैं झूले

सावन में कई मंदिरों में भगवान और देवी-देवताओं के लिए भी झूले सजाए जाते हैं। फूलों और रंग-बिरंगी झालरों से इन झूलों को सुंदर बनाया जाता है। यह परंपरा कई राज्यों में आज भी पूरे उत्साह के साथ निभाई जाती है।

सावन में झूला झूलने का महत्व

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सावन में झूला झूलना शुभ माना जाता है। कहा जाता है कि इससे परिवार में प्यार और एकता बनी रहती है। पति-पत्नी के रिश्ते में मधुरता आती है और माता पार्वती का आशीर्वाद मिलता है। वहीं, झूला झूलने से मन भी खुश रहता है और सावन के सुंदर मौसम का आनंद लेने का मौका मिलता है।

कहीं रोज-रोज का एक जैसा रूटीन आपके प्यार को फीका तो नहीं कर रहा?

लंबे रिश्तों में आने वाली बोरियत को दूर करने और प्यार को फिर से जगाने के लिए इस लेख में तरीके बताए गए हैं। रोजमर्रा के रूटीन में छोटे बदलाव और आपसी बातचीत से रिश्ते में नई जान डाली जा सकती है।

शुरुआती दिनों में देर रात तक बातें करना और एक-दूसरे को सरप्राइज देना, समय के साथ ये पीछे छूट जाता है। जब दो लोग शादी के पवित्र रिश्ते में बंधते हैं, तो अक्सर जिंदगी एक तय रूटीन पर चलने लगती है। सुबह उठना, ऑफिस जाना, घर लौटकर टीवी देखना और सो जाना। यह रोज का एक जैसा रूटीन अनजाने में ही पार्टनर्स के बीच एक दूरी पैदा कर देता है। इसे ही रिश्ते में बोरियत बढ़ती है। अगर समय रहते इस रूटीन को बदला न जाए, तो प्यार का रंग धीरे-धीरे फीका पड़ने लगता है। जीवन में कुछ बदलाव जरूरी है। ऐसे में इनके बारे में पता होना जरूरी है। आज का हमारा लेख इसी विषय पर है। आज हम आपको अपने इस लेख के माध्यम से बताएंगे कि रिश्ते में क्यों आ जाती है बोरियत और इसे कैसे दूर करें?

रिश्ते में कैसे आती है बोरियत?

शुरुआत में जब कोई रिश्ता नया होता है, तो हर दिन एक नया मोड़ लेकर आता है, लेकिन जैसे-जैसे समय निकलता है, पार्टनर्स एक-दूसरे के साथ बहुत ज्यादा कंफर्टेबल हो जाते हैं। साथ ही रिश्ते में टेकन फॉर ग्रांटेड का भाव आने लगता है। घर की जिम्मेदारियां, पेरेंटिंग, ऑफिस स्ट्रेस और रोज के कामकाज जीवन पर इस कदर हावी हो जाते हैं कि दोनों पार्टनर्स के पास एक-दूसरे के लिए कुछ नया करने की एनर्जी ही नहीं बचती। ऐसे में जब रिश्ते से सरप्राइज और एडवेंचर खत्म हो जाता है, तो वही पुराना रूटीन रिश्ते पर भारी पड़ने लगता है।

इस स्थिति से कैसे निपटें

- अगर आप भी इस बोरियत का सामना कर रहे हैं, तो पूरा रूटीन बदलने की जरूरत नहीं है। बस निम्न बदलाव करें-
- हफ्ते में कम से कम एक दिन ऐसा तय करें जब आप दोनों किसी नए कैफे में जाएं या घर पर ही साथ मिलकर खाना बनाएं।
- एडवेंचर के लिए हमेशा किसी बड़े वेकेशन या महंगे गिफ्ट की जरूरत नहीं होती। पार्टनर के जागने से पहले उनके लिए चाय बनाना, ऑफिस के बीच में एक छोटा सा 'आई मिस यू' का मैसेज भेजना या बिना किसी मौके के उनका पसंदीदा फूल लाकर देना खास महसूस करवाते हैं।

एक्सपर्ट की राय

कई बार पार्टनर्स मन ही मन उम्मीद करते हैं कि सामने वाला उनके लिए कुछ खास करे। अपनी इच्छाओं को खत्म करने के बजाय पार्टनर से खुलकर बात करें कि आप रिश्ते में क्या नयापन चाहते हैं।

आईएनआईएफडी की छात्राओं ने भारतीय व्यापार महोत्सव में किया एजुकेशनल डिजाइनर सर्वे

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। आईएनआईएफडी डिज़ाइन संस्थान, श्रीगंगानगर की छात्राओं द्वारा नई दिल्ली में आयोजित भारतीय व्यापार महोत्सव में सहभागिता करते हुए तीन दिवसीय एजुकेशनल डिजाइनर सर्वे सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। निदेशक डॉ. ब्रह्म भाटिया ने बताया कि इस शैक्षणिक दौरे के दौरान छात्राओं ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न ब्रांड्स के स्टॉल्स का अवलोकन कर फैशन, टेक्सटाइल, गारमेंट निर्माण तथा विजुअल डिस्प्ले की आधुनिक तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान हासिल किया।

सर्वे की विस्तृत जानकारी देते हुए पारुल भाटिया ने बताया कि तीन दिवसीय अध्ययन के दौरान छात्राओं ने भारतीय व्यापार महोत्सव में उपस्थित सभी प्रमुख डिजाइनर ब्रांड्स का गहन सर्वे किया तथा महोत्सव में अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई। इस दौरान छात्राओं को विभिन्न प्रकार के डिजाइनर गारमेंट्स की पहचान करने, उनकी गुणवत्ता परखने तथा बाजार में उनकी मांग का आकलन करने के तरीके प्रायोगिक रूप से सिखाए गए। छात्राओं ने मध्यप्रदेश, दिल्ली, लखनऊ, कश्मीर तथा पंजाब सहित देश के अनेक राज्यों के स्टॉल्स पर जाकर टेक्सटाइल व फैशन की नई तकनीकों का अध्ययन किया। साथ ही फाइबर से कपड़ा तैयार करने की प्रक्रिया, डिजाइनिंग प्रोसेस, मार्केटिंग रणनीतियों तथा विजुअल डिस्प्ले की बारीकियों को गहराई से समझा।

डॉ. ब्रह्म भाटिया ने बताया कि प्रदर्शनी में देश-विदेश के कई उत्कृष्ट डिजाइनर उत्पादों का प्रदर्शन किया गया था, जिनमें वेस्ट मटेरियल से तैयार किए गए दैनिक उपयोग के डिजाइनर बैग्स तथा विभिन्न प्रकार की घरेलू वस्तुएं विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। पारुल भाटिया ने कहा कि भारत में ही निर्मित इन पर्यावरण-अनुकूल डिजाइनर उत्पादों की भारतीय तथा विदेशी दोनों बाजारों में भारी मांग है तथा इन्हें व्यापक स्तर पर एक्सपोर्ट किया जाता है। उन्होंने कहा कि यह प्रैक्टिकल मार्केट सर्वे छात्राओं के लिए भविष्य में स्वयं का कार्य शुरू करने, स्वरोजगार स्थापित करने तथा अपना निजी डिजाइनर स्टूडियो संचालित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगा।

निदेशक डॉ. ब्रह्म भाटिया ने छात्राओं के इस सफल शैक्षणिक सर्वे पर खुशी व्यक्त करते हुए इसे उनके व्यावसायिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे राष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता से छात्राओं को उद्योग की व्यावहारिक आवश्यकताओं तथा वैश्विक रुझानों को समझने का अवसर मिलता है, जो उन्हें डिजाइनिंग के क्षेत्र में आत्मनिर्भर तथा सफल उद्यमी बनने में निसंदेह सहायक सिद्ध होगा।

'हरित धरा एवं सांस्कृतिक सावन महोत्सव' आयोजित

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। सृजनशाला संस्थान द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक प्रकल्प के तहत सेतिया फार्म स्थित संस्था परिसर में राजस्थानी लोक संस्कृति से ओत-प्रोत 'हरित धरा एवं सांस्कृतिक सावन महोत्सव' का हर्षोल्लासपूर्वक आयोजन किया गया।

अध्यक्ष सोनू वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि पर्यावरण संरक्षण एवं हरित धरा का पावन संदेश देते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं को विभिन्न प्रजातियों के 105 औषधीय, छायादार एवं फलदार पौधे वितरित किए गए।

उपस्थित सभी प्रबुद्धजनों ने संस्थान की इस अनूठी सामाजिक व पर्यावरण हितैषी पहल की मुक्तकंठ से सराहना की तथा समाज में पर्यावरण चेतना व सांस्कृतिक मूल्यों को निरंतर बनाए रखने का संकल्प लिया।

सचिव पूनम वर्मा ने बताया कि राजस्थानी लोक संगीत की सुमधुर धुनों से सराबोर इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में महिलाओं के लिए अनेक मनोरंजक व पारंपरिक सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें सभी ने बढ़-चढकर भाग लिया। इसके साथ ही नन्हें-मुन्ने बच्चों के लिए भी अनेक रोचक एवं उत्साहवर्धक खेल आयोजित किए गए, जिनका महिलाओं, बच्चों एवं अभिभावकों ने भरपूर आनंद उठाया। महिलाओं-बच्चों के लिए सावन के झूले तथा सेल्फी प्वाइंट विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। संपूर्ण परिसर राजस्थानी लोक संस्कृति और सावन के उल्लास से सराबोर नजर आया। कार्यक्रम के दौरान आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. मुस्कान एवं विनीत अरोड़ा औषधीय पौधे के गुणों से अवगत कराया तथा बरसात के मौसम में स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी दी।

अध्यक्ष सोनू वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान युवतियों व महिलाओं ने राजस्थानी घुमर, कालबेलिया नृत्य आदि सांस्कृतिक प्रस्तुतियों द्वारा अदभुत समां बांधा।

सुभाष ठाकुर ने बताया कि इस मौके पर आयोजित तीज क्वीन प्रतियोगिता के खिताब से दक्षा शेखावत को नवाजा गया तथा मेहन्दी प्रतियोगिता की विजेता रश्मि राठौड़ बनी। कार्यक्रम में तुलसी क्रिएशन तथा जय माँ चिंतपूर्णी प्रोपर्टीज का विशेष सहयोग रहा।

इस अवसर पर रूबीना, पिंकी, अनु नागपाल, लविश, शैंकी उपनेजा, शिल्पा, तनु, गरिमा खुंगर, भावना सेठी, प्रवीण बख्शी, रितु खुंगर, खुशी कथूरिया सहित सृजनशाला संस्थान सदस्य, योग साधक एवं युवतियां, महिलाएं व बच्चे उपस्थित थे।

सुरसखी का पहला मंचीय कार्यक्रम : महिला कलाकारों ने लाइव संगीत संग गीतों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया

श्रीगंगानगर। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में महिला कलाकारों की नवगठित संस्था 'सुरसखी' ने राष्ट्रीय कला मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में चौधरी रामजस सदन (ऑडिटोरियम) में कल रविवार देर शाम को एक यादगार म्यूजिकल कार्यक्रम स्वरांजली का आयोजन किया। संस्था का यह पहला मंचीय कार्यक्रम था, जिसमें ऑडिटोरियम श्रोताओं से खचाखच भर गया। हर कलाकार की प्रस्तुति से पहले करतल ध्वनि से श्रोताओं ने उनका हौसला बढ़ाया और महिला कलाकारों ने लाइव संगीत की संगत पर एक से बढ़कर एक शानदार गीत गाकर सबका मन मोह लिया।

लगभग दो घंटे चले इस कार्यक्रम में सुरसखी की सदस्य कलाकारों ने बारी-बारी से प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत कोरस सिंगिंग से हुई, जिसमें सुरसखी एंथम और 'ए वतन' को सामूहिक रूप से प्रस्तुत किया गया। इसके बाद डॉ. रजनी अग्रवाल ने इंस्ट्रूमेंटल में 'अजीब दास्ताँ है ये' पेश किया। स्वाति ने 'दिल है कि मानता ही नहीं' और 'कुछ ना कहो' गाया। ज्योति गौड ने 'मोह मोह के धागे' और 'रावी' की

भावपूर्ण प्रस्तुति दी। डॉ. गरिमा ने 'पल पल हर पल', डॉ. रजनी ने 'पीड़ा नूं मैं सीने लावां', डॉ. आनंदिनी ने 'ए मेरे हमसफर', प्रीति लकीना ने 'आवाज़ दो हमें', ज्योति सर्राफ ने 'तूने ओ रंगीले कैसे जादू किया', प्रेरणा ने 'ए दिल मुझे बता दे', प्रिया जैन ने 'बाबू जी धीरे चलना', रेनू वर्मा ने 'तेरे बिना ज़िंदगी से कोई' और मीनू चिमनी ने 'लग जा गले' गाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। इन सभी कलाकारों ने पैरोडी कोरस भी प्रस्तुत किया।

संगीत अध्यापिका जोहरी भाटिया ने 'ए मेरे वतन के लोगों' गाकर पूरे कार्यक्रम को देशभक्ति की भावना से सराबोर कर दिया। रिदम गुरु सुनील मौर्य का म्यूजिक अरेंजमेंट बेहद शानदार रहा। उन्होंने खुद रिदम सेक्शन संभाला। पंकज पाहवा ने ऑर्गन, मंथन कालड़ा ने गिटार और सुशील जुनेजा ने की पैड पर संगत देकर प्रस्तुतियों को और निखारा।

मुख्य अतिथि दिलदारसिंह बीर ने सभी गायक कलाकारों और साजिदों को सम्मानित किया। राष्ट्रीय कला मंदिर के अध्यक्ष वीरेंद्र बैद ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि श्रोताओं ने जी-जान से कलाकारों को सुना और कलाकारों ने भी इतनी बखूबी प्रस्तुति दी कि बिल्कुल नहीं लगा कि वे पहली बार मंच पर हैं। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम राष्ट्रीय कला मंदिर द्वारा आयोजित किसी भी उच्चस्तरीय कार्यक्रम से कम नहीं था। इसका पूरा श्रेय महिला कलाकारों के कड़े अभ्यास, सुर-साधना और मेहनत को जाता है।

सुरसखी की संस्थापक संयोजक डॉ. रजनी अग्रवाल ने बताया कि इस पहले कार्यक्रम को लेकर संस्था से जुड़ी महिलाओं में कुछ संशय था, लेकिन श्रोताओं के अपार हौसले और समर्थन ने सारे संदेह दूर कर दिए। उन्होंने कहा कि यह अनुभव हमें नया उत्साह और प्रेरणा दे गया है। अगला कार्यक्रम इससे भी अधिक शानदार और उच्च स्तर का होगा। कार्यक्रम का सुंदर संचालन कवियत्री रितुसिंह ने किया। शहर के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और उन्होंने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

मारवाड़ी युवा मंच नारी चेतना शाखा सम्मानित

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। मारवाड़ी युवा मंच नारी चेतना शाखा, श्रीगंगानगर को समाजहित तथा जनकल्याण के क्षेत्र में दिए गए उत्कृष्ट व उल्लेखनीय योगदान के लिए स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित जिला स्तरीय समारोह में सम्मानित किया गया। जिला प्रशासन द्वारा आयोजित इस समारोह में नारी चेतना शाखा को विभिन्न सामाजिक व जनकल्याणकारी गतिविधियों में निरंतर सक्रिय भूमिका निभाने के लिए यह जिला स्तरीय पुरस्कार प्रदान किया गया है।

अध्यक्ष सविता जैन ने बताया कि नारी चेतना शाखा द्वारा विगत कई वर्षों से समाजहित एवं जनकल्याण के क्षेत्र में निरंतर सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। संस्था विशेष रूप से कन्या शिक्षा को बढ़ावा देने, निर्धन कन्याओं के विवाह संपन्न कराने, महिला सशक्तिकरण को बल देने, सामाजिक सरोकारों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने तथा जीवदया एवं पशु-पक्षियों के संरक्षण व सेवा जैसे अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

जिला स्तरीय सम्मान समारोह के अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच नारी चेतना शाखा अध्यक्ष सविता जैन, पूजा मित्तल, स्नेहा वर्मा, प्रिया बिड़ला, सरोज घोड़ेला, शीनम, बबीता लखोटिया, मधु मुंदड़ा सहित

स्वाधीनता दिवस पर पत्रकार सिंह हुए सम्मानित

द सांध्यदीप नेटवर्क,ब्यावर (दिलीप सिंह)। रचनात्मक पत्रकारिता के लिए प्रतिष्ठित माणक अलंकरण (विशिष्ट पुरस्कार) से अलंकृत वरिष्ठ पत्रकार दिलीप सिंह को देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर जिला प्रशासन द्वारा विजयनगर रोड स्थित सम्राट पृथ्वीराज चौहान खेल स्टेडियम में आयोजित जिला स्तरीय मुख्य सार्वजनिक समारोह में पत्रकारिता के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने पर मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत, विधायक शंकर सिंह रावत,जिला कलक्टर कमलराम मीना,जिला पुलिस अधीक्षक रतन सिंह राठौड़,अति.जिला कलक्टर ब्रह्मलाल जाट,उपखंड अधिकारी दिव्यांश सिंह,जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी धनदान देथा व भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष सांड़ ने प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इससे पूर्व उन्हें कई सरकारी व गैर सरकारी पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। 25वर्षीय पत्रकारीय सफर में वरिष्ठ पत्रकार सिंह संसार प्रसिद्ध प्रयागराज महाकुंभ मेला-2025,हरिद्वार महाकुंभ मेला-2010व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आधिकारिक राजस्थान यात्रा का तीन बार विशेष कवरेज भी कर चुके है। वे वर्तमान में सांध्यदीप समाचार पत्र के लिए अधिकृत संवाददाता है।

पत्रकार परिषद रायसिंहनगर की नई कार्यकारिणी गठित, भूपेंद्र सिंह अध्यक्ष

रायसिंहनगर(सुखदीप सिंह)। पत्रकार परिषद रायसिंहनगर की बैठक गुरुद्वारा सिंह सभा में वरिष्ठ पत्रकार नरेश गोयल की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में पत्रकारों के समक्ष क्षेत्र में आने वाली विभिन्न समस्याओं, पत्रकारों के हितों से जुड़ी योजनाओं तथा संगठन को और अधिक प्रभावी एवं मजबूत बनाने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक के दौरान संगठन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए सर्वसम्मति से कार्यकारिणी का गठन किया गया।

बैठक में भूपेंद्र सिंह को अध्यक्ष,जितेंद्र अरोड़ा को महासचिव,विक्की भंडोरिया को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, संजय बिश्नोई व कपिल सहगल उपाध्यक्ष,हरभजन सिंह सूदन विधि सलाहकार,नरेश गोयल व नरेश ठक्कर को सचिव,गोविंद शर्मा को सहसचिव,सुखदीप सिंह को कोषाध्यक्ष,रामस्वरूप नायक को प्रेस प्रवक्ता,नंदलाल दुगरिया को संगठन मंत्री ,संदीप गोयल व पवन जोशी को प्रचार मंत्री, मनप्रीत सिंह व सुशील भाटी को सह प्रचार मंत्री एवं रमेश लोटिया को सदस्य बनाया गया। इसके अलावा वरिष्ठ पत्रकार राकेश भांभू एवं जयदेव गोयल को संरक्षक नियुक्त किया गया।

नवनियुक्त अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह ने कहा कि पत्रकार परिषद संघ को जमीनी स्तर पर और मजबूत किया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत पत्रकारों को भी संगठन से जोड़कर परिषद का विस्तार किया जाएगा, ताकि क्षेत्र के प्रत्येक पत्रकार की समस्याओं को संगठन के मंच से मजबूती के साथ उठाया जा सके।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय 9ए छोटी में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया

श्रीगंगानगर। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय 9 ए छोटी(ब्लॉक श्रीगंगानगर) में देश का 80वां स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अवतार सिंह मल्होत्रा व संदीप गेरा थे। विशिष्ट अतिथि ज्ञान तलेजा, अजीत गेरा, दीपक गेरा तथा सुधीर उपस्थित रहे। शिक्षा मंत्री का संदेश विद्यार्थियों को वाचन करवाया गया, लोकतंत्र के हित में निर्भीक मतदान की शपथ सभी उपस्थित मतदाताओं को दिलवाई गई। भामाशाह संदीप गेरा द्वारा विद्यालय को रखरखाव के लिए 5100 देने की घोषणा की गई । स अमर सिंह सरोज विद्यार्थी सहायता समिति के अध्यक्ष अवतार सिंह मल्होत्रा ने विद्यालय को दो छत के पंखे देने की घोषणा की । ध्वजारोहण के बाद छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसमें सभी भागीदार छात्र छात्राओं को अवतार सिंह मल्होत्रा ने सम्मानित किया और बच्चों को मन लगा कर पढ़ने का संदेश दिया ।मल्होत्रा ने बच्चों को डट कर पढ़ाई में अच्छे अंक प्राप्त कर उच्च पद पर आसीन होने के लिए प्रोत्साहित किया गया और कहा कि आप आईं ए एस, आर ए एस बनकर अपने माता पिता का ओर विद्यालय का नाम रोशन करे। समारोह के अंत में प्रधानाध्यापक राकेश बवेजा ने सभी अभिभावकों,भामाशाहों व आगंतुओं का आभार व्यक्त किया और स अमर सिंह सरोज विद्यार्थी सहायता समिति के अध्यक्ष अवतार सिंह मल्होत्रा को समारोह में पधारने व बच्चों को सम्मानित करने एवं शाला को 2 छत के पंखे देने के लिए आभार व्यक्त किया ।कार्यक्रम के पश्चात सभी छात्र छात्राओं ,आगंतुओं को 5 जी छोटी की सरपंच गुरमीत कोर द्वारा बूंदी का प्रसाद वितरित किया गया।

एआई व क्यूरा टेक फिजियो डॉ. मनीष कपूर ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दोहरी गौरवपूर्ण उपलब्धि हासिल की

श्रीगंगानगर। श्रीगंगानगर के विख्यात फिजियोथेरेपिस्ट फिजियो डॉ. मनीष कपूर को राष्ट्रीय स्तर पर वी केयर मीडिया फाउंडेशन% द्वारा आयोजित 'हेल्थकेयर एक्सीलेंस अवार्ड - 2026' में प्रतिष्ठित 'नेशनल डॉक्टर ऑफ द ईयर-2026' सम्मान से अलंकृत किया गया है। इसके साथ ही, चिकित्सा एवं आधुनिक तकनीकी क्षेत्र में एक और गौरवपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए डॉ. मनीष कपूर 20 से 21 नवंबर, 2026 को भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित होने वाले दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ग्लोबल डिजिटल हेल्थ समिट, एक्सपो एंड इनोवेशन अवार्ड-2026' के लिए भी आधिकारिक रूप से पंजीकृत हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि पूरे राजस्थान राज्य से इस अंतरराष्ट्रीय महाकुंभ के लिए शून्य पंजीकरण शुल्क पर नामांकित होने वाले वे एकमात्र फिजियोथेरेपिस्ट हैं।

फिजियो मनीष कपूर ने बताया कि राष्ट्रीय पुरस्कार 'नेशनल डॉक्टर ऑफ द ईयर-2026' उन्हें चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट समर्पण, असाधारण योगदान, बिना सर्जरी दर्द से राहत दिलाने वाली अत्याधुनिक तकनीकों के सफल क्लीनिकल ट्रायल्स तथा एआई+हेल्थ कोर्सेस के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा में आधुनिक तकनीक के बेहतर उपयोग के लिए प्रदान किया गया है।

वी केयर मीडिया द्वारा प्रतिवर्ष स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित इस राष्ट्रीय ऑनलाइन प्रतियोगिता में देशभर से 1000 से अधिक शीर्ष चिकित्सकों ने भाग लिया था, जिसमें कड़े मूल्यांकन तथा पारदर्शी चयन प्रक्रिया के पश्चात् केवल सर्वश्रेष्ठ टॉप 100 डॉक्टरों को इस सम्मान के लिए चुना गया। संस्था के संस्थापक एवं संपादक श्याम सुंदर गौड़ द्वारा यह राष्ट्रीय सम्मान प्रमाणपत्र जारी किया गया है।

एआई तथा क्यूरा टेक फिजियोथेरेपिस्ट के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके डॉ. मनीष कपूर पूर्व में 'इंटरनेशनल बुक्स ऑफ रिकॉर्ड्स' में भी अपना नाम दर्ज करा चुके हैं तथा उनके पास डीपीटी, सीएमटी, सीटीएए तथा सीकेपीटीआर जैसी प्रतिष्ठित उच्च शैक्षणिक योग्यताएं हैं।

फिजियो मनीष कपूर ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित होने वाला 'ग्लोबल डिजिटल हेल्थ समिट 2026' इस वर्ष 'इम्पलीमेंटिंग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस - एआई इन एक्शन' के मुख्य विषय पर केंद्रित है।

हिन्दू युवती की बरामदगी की मांग को लेकर कोतवाली थाने का घेराव

श्रीगंगानगर। एक हिंदू युवती के लापता होने के मामले में कार्रवाई की मांग को लेकर हिंदू जागरण मंच के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को कोतवाली थाने का घेराव कर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस से युवती की जल्द सकुशल बरामदगी की मांग की। इस दौरान कथित 'लव जिहाद' के विरोध में पुतला दहन भी किया गया। प्रदर्शनकारियों के अनुसार, 13 अगस्त को युवती के परिजनों की ओर से रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। आरोप है कि मुस्लिम युवक आदिल खान युवती को बहला-फुसलाकर अथवा डरा-धमकाकर अपने साथ ले गया। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद अब तक अपेक्षित कार्रवाई नहीं होने से परिजनों और समाज में रोष है। कोतवाली थाने के बाहर प्रदर्शन के दौरान बड़ी संख्या में कार्यकर्ता व विभिन्न सामाजिक धार्मिक संगठनों के लोग शामिल हुए और युवती की तत्काल बरामदगी की मांग की। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस-प्रशासन से मामले में तेजी से कार्रवाई करने की मांग उठाई। पुलिस-प्रशासन की ओर से युवती को जल्द से जल्द सकुशल घर वापस लाने के प्रयास करने का आश्वासन दिया गया। इसके बाद प्रदर्शनकारियों ने धरना समाप्त कर कथित 'लव जिहाद' के विरोध में पुतला दहन किया। हिंदू जागरण मंच के अध्यक्ष राजीव शर्मा ने कहा कि क्षेत्र में इस प्रकार के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। आरोप लगाते हुए प्रशासन से प्रभावी कार्रवाई की मांग की जा रही है। उन्होंने कहा कि संगठन कई बार प्रशासन को इस संबंध में आगाह कर चुका है, लेकिन उनकी नजर में रोकथाम के लिए प्रभावी कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कानून-व्यवस्था बनाए रखना प्रशासन की जिम्मेदारी है और ऐसे मामलों में निष्पक्ष एवं त्वरित जांच कर दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। यदि पुलिस हमारी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकती तो अपनी सुरक्षा स्वयं करनी होगी।ऐसे में जिहादियों को कड़ा जवाब देना हमारी प्राथमिकता होगी। जिसकी समस्त जिम्मेदारी प्रसाशन की होगी। प्रदर्शनकारियों ने युवती की जल्द सकुशल बरामदगी के साथ पूरे मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की।

उल्लेखनीय है कि युवती के लापता होने के बाद से ही यह मामला शहर में चर्चा का केन्द्र बना हुआ है और इस मामले में आरोपितों की गिरफ्तारी और युवती की बरामदगी की मांग को लेकर अनेक लोग उच्चाधिकारियों से भी मिल चुके हैं।